आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 1/मार्च 2025
Received: 10/2/2025; Published: 25/3/2025

कविता

हिंदी की कहर

परवीन लता
असिस्टंट प्रोफेसर
फीजी नेशनल युनिवर्सिटी, फीजी

परवीन लता , हिंदी की कहर , आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 1/मार्च 2025,** (46-47)
https://doi.org/10.5281/zenodo.15097342

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

होती जा रही है हिंदी हमारी बेघर

बियावान फीजी देश में, आखिर क्यों?

तपती है ये, होती है ये तिरस्कृत

अपने ही हिंदी बोलने वालों के बीच

साया बनकर रह जाती है ये

अटकते और भटकते रह जाती है ये

प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूल से ही

लहरों में डूबती नाव जैसे, डूब जाते हैं हिंदी के शब्द

धुन्धला सा छा जाता है तब

साधने के वक्त भाव छूट जाता है जब

जागो ऐ हिंदुस्तानी कहलाने वालों

करो अनंत कोशिशें, बनालो अटूट रिश्ता हिंदी से

लगे अगर हिंदी एक जंग तो

चलना शब्दों की धार पर तलवार सा

है हिंदी पठन पाठन की यात्रा सुखद

बना लो रिश्ते इस से, पार होगी नैया जीवन की

पूर्ण होगी तुम्हारी अभिलाषा, ना समझो इसे तुम पराया

धर्म, संस्कृति, नैतिकता का सैलाब इसमें है छलकता

पाना है अधिकार अगर अज्ञानता पर तो

लेते चलो साथ गिरमिटियों का ये दिन

ना कहरने दो हिंदी को, आज़ाद इसे व्यथा से कर दो

सूत्र में बांध लो इसको, मिलेगा सम्मान, अपना लो इसको।

****